मेरा भारत महान

- कु० अंशिका गर्ग
छात्रा (कक्षा – 12)

भारत हमारी मातृभूमि हैं हमारी पुण्य भूमि है। इसके तीर्थ हमारी आस्था और श्रद्धा के केन्द्र हैं। वैदिक संस्कृति भारतीय संस्कृति की रीढ़ है। हिन्दू सभ्यता हमारी सभ्यता का मूलाधार है। मानस से प्रतिपादित धर्म भारतीय धर्म है। विश्व में भारत का गुणगान करने वालों की भरमार है। भारत को विश्व गुरू कहलाने का गौरव प्राप्त है। स्वर्ग भूमि कहकर इसकी स्तुति की जाती है। विष्णु पुराण में कहा गया है, " भारत भूमि में जन्में लोग देवताओं की अपेक्षा अधिक धन्य हैं "। नारद पुराण में कहा है " आज भी देवता भारत में जन्म लेने की इच्छा रखते हैं " । महादेवी वर्मा कहती हैं " संसार में इतना सुन्दर देश दूसरा नहीं हैं "। जिन्होंने बाहर जाकर देखा है वे भी कहेगें की वास्तव में ऐसी हरी-भरी भूमि, जिसमें तुषार मण्डित हिमालय भी हैं, जिसमें सूर्य की किरणें केसर के फूलों की तरह शोभा बरसाती हैं, जिसके कण्ठ में गंगा यमुना जैसी नदियों की माला पड़ी हुई है, जिसके चरण कन्याकुमारी में तीनों सागर धोते हैं। कितनी सम-विषम है ऐसी सुफलां सुफलां भारत की ही धरती है। महाकवि रविन्द्रनाथ उसे देवात्मा मानते हैं, वीर दामोदर सावरकर लिखते हैं आप वसुन्धरा - तुम सुमगा हो, सुजला हो, सुवर्णा हो, सुरत्ना हो, तुम्हें हमारा वन्दन है। कालिदास ने हिमालय को पृथ्वी का मेरूदण्ड माना है। मनु ने भारत को मानवीय गुणों का प्रेरणा बिन्दु और शिक्षा का एक मात्र केन्द्र बताया है।

भारत ही है जहाँ प्रचण्ड गर्मी है तो प्रबल शीत और भरपूर वर्षा भी। शुष्क पतझर है तो हृदयकारी बसन्त भी, गर्मी, वर्षा और सर्दी अपने चातुर्मास काल में भारत को तृप्त करते हैं। षड्ऋतुएं भारत के ही भाग्य में हैं। विश्व की आदि पुस्तक 'वेद' ज्ञान के भण्डार है। सृष्टि में ज्ञान का अभ्युदय करने का और ज्ञान की ज्योति जलाये रखने का श्रेय पवित्र वेदों को ही है। संस्कृत भारत की आदि भाषा है। इस प्रकार आध्यात्म का पाठ पढ़ाने वाले धार्मिक ग्रन्थ विश्व में और कहाँ हैं ? कर्म, त्याग और संयम भारत की धरोहर है। ''कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन'' यहाँ का मूल मंत्र है। 'भोग' संयम के साथ बंधा है। 'सम्पदा' पुण्यकर्मो द्वारा मंगलमय प्राप्त करती है। 'त्याग' 'मोक्ष' का मार्ग प्रशस्त करता है।

विश्व ने जीवन की समृद्धि के लिए एक ही उपाय स्वीकार किया और वह है आवश्यकताओं की वृद्धि और पूर्ति के लिए छटपटाहट । उसी जगह भारत ने अपरिग्रह और आवश्यकताओं को घटाने का उपदेश दिया, सादा जीवन उच्च् विचार का सन्देश सुनाया । वह भारत ही है जिसने वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम में समाज कल्याण के लिए जीवन समर्पण का मार्ग प्रशस्त किया । संस्कृति, सभ्यता, जीवन मूल्य, जीवन शैली, जीवन उक्ति तथा आत्मविश्वास का ज्ञान भारत के कण कण में व्याप्त है । इसी के तत्वज्ञान के आचरण में सच्चा सुख है, सच्ची उन्नति है, इसलिए भारत सारे जग में श्रेष्ठ है, अजर है, अमर है, समन्वय और सांमजस्य भारतीय संस्कृति के विशेष गुण है । हमने हर जातीय सभ्यता के आदर्श को आत्मसात किया है ।

इसी सन्दर्भ में हमें याद रखना है कि हम विश्व में कहाँ हैं । भारत का एक और पक्ष भी हैं । वह है भारत पर बढ़ते ऋण की समस्या, साथ ही साथ यह भी कि भारत की 70% जनता गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही है । अनेक प्रान्त आतंकवाद, की आग से झुलस रहे हैं । कश्मीर, नागालैण्ड, मिजोरम तथा असम में स्थिति अत्यन्त विस्फोटक बनी हुई है । नेता गद्दी की लड़ाई में व उग्रवादी. मुसलमान देश का सन्तुलन को बिगाड़ने के नए होमलैण्ड की तलाश में हैं । 'ला एण्ड ऑर्डर' चौराहे पर औंधें मुँह पड़ा हुआ है । आतंकवाद की समस्या सुरसा के मुँह की भाँति, हमारे भारत को निगलने की फिराक में हैं ।

भारत 1947 में आजाद हुआ - चीन की क्रान्ति 1949 में हुई कहाँ रह गया भारत और कहाँ पहुँचा चीन

2001	चीन	भारत
जनसंख्या	1 अरब 30 करोड़	1 अरब से कुछ अधिक
वार्षिक जनसंख्या वृद्धि दर	0.8%	1.8%
औसत आयु	71 वर्ष	64 वर्ष
शिशु मृत्यु दर प्रति हजार	30	69
निरक्षरता दर (15 वर्ष से अधिक आयु)	15.5%	42%
सकल घरेलू उत्पाद (जी.डी.पी.)	1200 अरब डॉलर	500 अरब डॉलर
प्रतिव्यक्ति आय	890 डॉलर	400 डॉलर
प्रतिव्यक्ति बिजली खपत	380 किलोवाट घंटा	705 किलोवाट घंटा
प्रत्यक्ष विदेशी पूँजी निवेश	40 अरब डॉलर	3 अरब डॉलर
टेलीफोन कनेक्शन (मार्च 2002)	19 करोड़	3.2 करोड़
कम्प्यूटर रखने वाले (मार्च 2002)	3 करोड़	50 लाख
मोबाइल उपभोक्ता	20 करोड़	1 करोड़

सबको हिंदी सीखनी ही चाहिए - इसके द्वारा भाव विनिमय से सारे भारतजको सुविधा होगी ।

* श्री सी. राजगोपालाचारी*